एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

कटड़ों में पेशाब रुकने के कारण एवं उपचार

(*अमित कुमार[1], नवीन कुमार[1] एवं आकाश[2])
[1]लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविध्यालय, हिसार, हरियाणा
[2]चौधरी चरण सिंह कृषि विश्वविधालय, हिसार, हरियाणा
संवादी लेखक का ईमेल पता: amitdhartterwal@gmail.com

पशुओं में पेशाब के रुकने की समस्याएं दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। परंतु कटड़ों में ये समस्या ज्यादा पाई जाती है। आमतौर पर यह समस्या सर्दियों में ज्यादा पाई गई है। सर्दियों में कटड़ों के द्वारा कम पानी पीने के कारण पेशाब का रुकना ज्यादा स्वाभाविक हो जाता है। कट्डों के पेशाब का रास्ता कटड़ियों के अपेक्षा लंबा एवं घुमावदार होता है जिसकी वजह से यह समस्या कटड़ों में ज्यादा मिलती है। सर्दियों के मौसम में चारे के द्वारा अधिक मात्रा में खनिज पदार्थ शरीर में जमा होने की वजह से घुमावदार पेशाब के रास्ते में पथरी बनने लगती है। पथरी के अलावा पेशाब के रास्ते का संक्रमण भी पेशाब के रुकने का एक अन्य कारण देखा गया है।

लक्षण:

- बार बार लंबे समय तक पेशाब करने की कोशिश करना परंतु नाकाम रहना ।
- बूंद-बूंद पेशाब का करना ।
- पूंछ को बार बार उठाना।
- पेशाब के लिए जोर लगाने की वजह से गुदा का बाहर आना।
- लिंग का बार बार फड़कना।
- उकेरा हुआ मूत्र मार्ग।
- पेट पर हाथ लगाने एवं दबाने से दर्द महसूस करना।
- पेशाब की थैली फटने की वजह से पेट का फूलना।

उपचार

पशुपालक को अगर शुरुआत में ही कटड़ों की इस समस्या का पता चल जाता है तो पहले इसका औषधीय उपचार किया जाता है जिसमें उसे 20-25 ग्राम नौंसादार, सीस्टोन की गोलियां, एंटीबॉयोटिक एवं एंटी-इन्फ्लेमेटरी दवाइयां दी जाती है। अगर फिर भी कटड़ा खुलके पेशाब नही कर पता है तो शल्य चिकित्सा द्वारा ईलाज किया जाता है। शल्य चिकित्सा से पहले USG (अल्ट्रासोनोग्राफी) करके पेशाब की थैली की जांच की जाती है एवं यह पता लगाने की कोशिश की जाती है की पथरी पेशाब की रास्ते में कहाँ बनी हुई है। इसके बाद इस समस्या का उपचार tube cytostomy (ट्यूब सिस्टोसटॉमी) द्वारा किया जाता है जिसमें फॉलीज्स कैथेटर को पेशाब की थैली में फिक्स किया जाता है जिसके माध्यम से कटड़े का पेशाब कुछ दिन तक इस नाली में से आता है। इसके ऑपरेशन के बाद लगातार 5 दिन तक एंटीबॉयोटिक, एंटी-इन्फ्लेमेटरी दवाइयों का कोर्स दिया जाता है। साथ ही में 20-25 ग्राम नौसादर गुनगुने पानी में पशु को

दिया जाता है। नौसादर पथरी को पिघलाने के लिए दिया जाता है। इसके कुछ दिन बाद पशु का पेशाब मूत्र द्वार से आने लगता है।

बचाव के तरीके

- सर्दियां शुरू होते ही अपने पशुओं को गुनगुना पानी पिलाए ताकि वो ज्यादा पानी पी सकें और उनको सर्दी भी न लगे।
- अपने पशुओं को concentrate (कंसंट्रेट) एवं ग्रीन फॉडर उचित मात्रा में खिलाएँ।
- पशु के चरने के स्थान पर सेंधा नमक की बट्टी रखें ताकि ज्यादा प्यास लगे।
- सर्दियों के मौसम में हफ्ते में 2-3 बार नौसादर दें।
- पेशाब की समस्या दिखाई देते ही जल्द से जल्द पशु को पशु चिकित्सक को दिखाएं।